

Ques:- Explain the contribution of Hull as Neo-Behaviourist.

नव-व्यवहारवादी के रूप में HULL (हल) के योगदानों की परीक्षा करें।

Ans:-

मनोविज्ञान के क्षेत्र में HULL की एक महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त है। L. L. Latham के अतिविपन्न श्रम पर जैसे मनोवैज्ञानिक नहीं हैं जिसने श्रमगत गहनता के साथ वैज्ञानिक विधियों के माध्यम से मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर अध्ययन किया है। HULL ने मनोविज्ञान में जिस प्रकार गणित की भाषा का प्रयोग किया, वैसा किसी ने नहीं किया। वैज्ञानिक शब्दों की खोज के लिए HULL ने चार प्रमुख विधियों को प्रस्तुत किया।

- (i) सरल प्रेरण विधि
- (ii) व्यवस्थित निर्धारित प्रेरण विधि
- (iii) प्रयोगात्मक परीक्षण विधि
- (iv) उपकाल्पनिक निगमन विधि (Hypothetical-Deductive method)

HULL ने अपने विद्वानों के मस्तिष्क को ज़िम्मेदार शब्दों में व्यक्त किया। उनमें अनुसार यदि व्यवहारवादियों के कार्यक्रम के अनुसार मनोविज्ञान को पास्तव में अन्य विद्वानों के समान एक परामर्शित विज्ञान बनाना है तो उपकाल्पनिक-निगमन विधि का उपयोग करना होगा। इस विधि के अन्तर्गत सर्वप्रथम परीक्षाओं को एक व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाता है फिर उच्च व्यवहारवादी क्रियाधारणों का अनुमोदन किया जाता है जो कि अंत में दोषों, चरणों के उभरने के कारण पर सिद्धान्त का निर्माण किया जाता है।

प्रारम्भिक काल में HULL की रचना व्यवहारवाद और गैरव्यवहारवाद दोनों में थी। लेकिन बहुत बुद्धिमत्तन, सोचने की अनुसंधान करने के बाद वह इन दोनों के द्विष्टीय में पूर्णतः संतुष्ट नहीं हो सका। उसने कहा कि मैं व्यक्तिगत रूप से WATSON के द्विष्टीय से इसलिए प्रभावित हुआ क्योंकि उसने अन्तर्दृष्टि की निरर्थकता और परामर्शिता के सामान्य गुणों की विशेषता उपयुक्त रूप में की। लेकिन मैं इससे बहुत से व्यवहारवादी L. L. Latham की अतिविपन्न और अर्थपूर्ण नहीं मानता हूँ। इसी प्रकार व्यवहारवादी विषय में HULL के योगदानों से भी वे सहमत नहीं हैं।

HULL का प्रारम्भिक अनुसंधान

शासकीय प्रयोगों के प्रयोगों पर प्रभावित थी। डिसेंबर 1920 में सीखने के प्रयोग के विषय में प्रकाशित पत्रिका का प्रकाशन किया। 1928 में अभिप्रेतता परीक्षण पर कार्य किया। 1928 में सांख्यिकी विधियों की उपयोगिता पर प्रकाश जला और सांख्यिकीय विधियों के लिए मशीन का उपयोग किया। सांख्यिकी की विधिना में सह-सांख्यिकी के प्रयोग की आवश्यकता पर प्रकाश दिया (प्रकाशित)। 1933 के आसपास सांख्यिकी और सांख्यिकीयता (Statistical Psychology) पर प्रयोग किया। HULL के अनुसार सीखना, प्रेरणा तथा उच्च मानसिक प्रक्रियाएं पूर्णतः जैविक होती हैं। यह Tolman की 'प्रयोजन तथा ज्ञान' (Purposive and Cognitive) की स्वीकार करता है किन्तु यह मानता है कि इसका विकास अनुबंधन (Conditioning) के माध्यम से होता है।

HULL का सबसे अधिक

मौलिक सीखना (Learning) के क्षेत्र में देखा गया। इसके सिद्धांत को *Principles of Learning* (सीखने का पुनर्बन्धन सिद्धांत) कहा जाता है।

HULL ने अपने सिद्धांत में

पुनर्बन्धन पर अधिक बल दिया। साथ ही तो अनुबंधन (Conditioning) और पुनर्बन्धन (Reinforcement) इस के व्यवसाय के दो मुख्य आधार हैं। सीखने के सिद्धांत का प्रकाशन में उन्होंने 1931 में अपनी संशोधित पुस्तक "Principles of Learning" में किया। सीखने के अन्य सिद्धांतों में HULL का सिद्धांत अपेक्षाकृत अधिक वैज्ञानिक और प्रत्येक दृष्टिकोण से कसौटी पर खरा उतरता है।

इस के सिद्धांत की अभिव्यक्तियां (Postulates):

1. अभिप्रेत आवेग (Motivational Intensity): इस के अनुसार जब कोई उत्तेजना-संवेदी अंग (Sensory Organ) को उत्तेजित करता है तो संवेदी-आवेग तंत्रिका उत्तर (Motivational Intensity) को उत्तेजित कर देता है। इसके बाद जैसे ही उत्तेजक की उत्तेजना समाप्त होने लगती है, वैसे ही उत्तेजना से उत्पन्न प्रभाव भी समाप्त होने लगता है। तंत्रिका उत्तेजना की समाप्ति धीरे-धीरे समय के रूप में होती है। उत्तेजना की मंद गति का समय *Extinction* (समिद्धि) के माध्यम से साहचर्य की रिक्ति उत्पन्न हो जाती है। जैसे, जब बरसात के

मौसम में बिजली चमकी है तो गर्जन बाद में होता है। लेकिन गर्जन का सादर्भ बिजली के आग ही होता है। इसका कारण यह है कि बिजली द्वारा जो तंत्रिका-उत्तेजना उत्पन्न होती है वह कुछ देर तक तंत्रिका आवेग के रूप में बिना रुकी है। आमतौर पर इलेक्ट्रिक समय इन्फ्रारेड के पत्रगत भी गर्जन की कम्पन होती है। कम्पन में 10^6 किलोवाट के द्वारा जो उत्तेजना उत्पन्न होती है वह इलेक्ट्रिक देर तक चली जाती है जो कि वह 10^6 किलोवाट के द्वारा उत्पन्न होने वाली उत्तेजनाओं के समय मिल जाती है।

2. प्रतिक्रियाशील नर्वस क्रिया (Assessant Nervous Intension): HULL के अनुसार संवेदी आवेगों (Sensory impulses) के मुख्य क्रियाएँ होती हैं। इस क्रियात्मक प्रक्रिया में Conscious प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। HULL यह भी मानता है कि व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं के अनुसार क्रिया करना चाहता है। पातावरणीय दशाएँ मिल हीं हुए भी जीव सुख प्राप्त करने के लिए उन्हीं उद्दीपकों के प्रति क्रिया करता है, जिनसे उसकी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

3. जन्मजात व्यवहार (Genate Behaviour): इस अभिव्यक्ति के अर्थात् HULL पशुजन्म और पातावरण सम्बन्धी बातों की यथाकसाईं इसीके अनुसार जो व्यवहार जन्मजात होता है वह सीखने के क्रम में तंत्रिका क्रम पर आधारित होता है। पातावरण इस प्रकार की प्रक्रियाओं को महत्व बनाता है तथा आवश्यकताओं के अनुसार उनमें परिवर्तन करता है।

4. अनुक्रिया और पुनर्बलन (Reinforcement and Extinction): सीखने के लिए अभ्यास (habit) को महत्व यह कहा गया है। HULL ने इस अभ्यास को 'अभ्यास बल' भी कहा है। इसके अनुसार अभ्यास बल तीन चरों (variables) पर आधारित होता है —
 (i) आवश्यकता की पूर्ति के कारण उत्पन्न होने वाले परिणाम।
 (ii) अनुक्रिया और पुनर्बलन के मुख्य उत्पन्न होने वाली देर।
 (iii) अनुक्रिया और अनुबन्धित उद्दीपक के मुख्य की ~~व्यवस्था~~ स्थायित्व।

5. सामान्यीकरण (Generalization): HULL ने यह प्रत्यय PARALEL से लिया है। जब पशु उद्दीपक के प्रति अनुक्रिया करता है तब उसी आदत बन जाती है जो कि वह उसी प्रकार के उद्दीपक के प्रति अनुक्रिया करता है।

6. अभिप्रेरण और अन्तर्दान (Motivation and Drive): HULL के अनुसार अभिव्यक्ति का सामान्य Drive से होता है। ये व्यवहार अभ्यास

वर्ष प्रतिष्ठिता के रूप में उद्घोषित करती हैं। HULL के सिद्धान्त में प्रेरणा की मुख्य भूमिका है। प्रेरणा के अभाव में किसी भी क्रिया को सीखना असम्भव है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि अपठ में HULL ने अपने सिद्धान्त को प्रस्तुत किया और 1957 में पूर्ण रूप से परिभाषित किया। HULL का प्रमुख योगदान अनुबंधित क्रिया और पुनर्बलन (Reinforcement) की अवधारणा सामग्री है। दूसरा महत्वपूर्ण कार्य 'आवश्यकता' से सम्बंधित है। उसके अनुसार व्यक्ति की जो आवश्यकता होती है उसे से सम्बंधित प्रेरणाएं इसमें उत्पन्न होती हैं। ये प्रेरणाएं ही व्यवहार का स्रोत बन जाती हैं। व्यक्ति जब अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है तो उनका मानसिक अभाव कम हो जाता है।

HULL के 'Reinforcement' अर्थों की कई आलोचनाएं भी हुई हैं। Tolman ने कहा कि सीखने में Reinforcement की कोई आवश्यकता नहीं होती। फिर, HULL की जिन परिस्थितियों में प्राथमिक प्रबलन दिखायी नहीं दिया वहाँ Secondary Reinforcement एवं अंतर्गत के स्वरूप की कल्पना कर ली लेकिन संतोषजनक प्रतीत नहीं की। हीपवर्थ के अनुसार HULL ने यह महत्वपूर्ण कार्य दूसरों के लिए छोड़ दिया है।

HULL के प्रबलन सिद्धान्त (Reinforcement Theory) की चारों दिशाओं में आलोचनाएं की जाएं। फिर भी मनोविज्ञान के इतिहास में अनुसंधान और सीखने के सिद्धान्तों के संदर्भ में इसे हमेशा विविध रूप से याद किया जाता रहेगा। नव-व्यवहारवादियों में यह इकलौता ऐसा व्यक्ति था जिसने योगदान कार्यपूर्ण थे और उनसे मनोव्यक्ति के शोधकर्तव्यों की मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

2
30/5/2020